वानिकी समाचार

वन विभाग राजस्थान का मासिक पत्र

वर्ष : 26 अंक : 1 जन.-फरवरी-2009

भाया पेड़ लगाओ रे।
काल की छाया मिटाओ रे।।

विकास और पर्यावरण

❐ डॉ. रामराय

भारत के पर्वतीय क्षेत्रों को पारिस्थितिकी दृष्टि से सम्पन्न और आर्थिक रूप से अल्प विकसित माना जाता है। मानवीय गतिविधियों के बढ़ते दबाव से जनसंख्या विस्फोट की आम समस्या के परिणामस्वरूप यहां मानव और प्रकृति के बीच एक सहजीवी संबंध काफी हद तक प्रभावित हुआ है। बढ़ती आबादी से ऐसी गतिविधियां की जाती है जो स्थायी विकास के लिए उपयुक्त नहीं है। प्राकृतिक संसाधनों के गैर-योजनाबद्ध विकास और दोहन से भूमि का और भी अधिक क्षरण हुआ है, जल संसाधनों की उपलब्धता धूमिल हुई है और हरियाली समाप्त हो रही है। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन और गलत संकल्पित विकास योजनाओं के कार्यान्वयन से पारिस्थितिकी प्रणाली को खतरा हुआ है, जबकि इन क्षेत्रों में पर्यटन के रूप में बड़ी आर्थिक संभाव्यता है। फिर भी नदियों, खनिजों, वनों आदि के रूप में प्राकृतिक संसाधनों को एक तार्किक और स्थायी रूप में उपयोग करने की आवश्यकता है।

मानवीय संस्थापना के लिए विशेष मूल संरचना के सृजन और पर्यटकों के लिए, कस्बों और स्थानीय लोगों के लिए जलावन लकड़ी की मांग को स्थानीय लकड़ियों से पूरा किया जाता है। ये अब भी ऊर्जा का मुख्य स्रोत हैं। चराई की मांग को भी इन समाप्त होते जंगलों से पूरा किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप जंगल समाप्त हो गए हैं, भूमि नग्न है, मिट्टी का क्षरण हुआ है और वन्य जीवन लुप्त होता जा रहा है। जल संसाधन या तो अनुप्रयुक्त हैं अथवा इनका अत्यधिक दोहन हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप पहाड़ी क्षेत्रों की पारिस्थितिकी और पर्यावरण को क्षति पहुंची है।

स्थायी विकास

विश्व बैंक (1992) में विकास को लोगों के कल्याण में सुधार के रूप में परिभाषित किया है। जीवन स्तर ऊपर उठाने और शिक्षा, स्वास्थ्य और अवसरों की समानता विकास के अनिवार्य घटक हैं, जबकि विकास से जीवन स्तर बेहतर हो सकता है। शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार आ सकता है और देश की अर्थव्यवस्था को लाभ मिल सकता है। इसका नकारात्मक प्रभाव भी है। अतः नीति विकल्पों में या तो बढ़ने देना है और सहन करना है अथवा विकास नहीं होने देना है। इसका समाधान पाने की जरूरत है। पर्यावरण की दृष्टि से स्थायी विकास पाने की एवं उपयुक्त विकास कार्य नीति का निर्धारण इसका एक सही विकल्प है।

वर्ल्ड कमीशन ऑन एन्वायर्नमेंट एण्ड डवलपमेंट ने शब्द ''स्थायी विकास'' को आरम्भ किया और इसे ''एक ऐसे विकास के रूप में परिभाषित किया जो भावी पीढ़ियों को अपनी आवश्यकताएं पूरी करने की क्षमता में कोई समझौता किए बिना वर्तमानी पीढ़ी की आवश्कताएं पूरी करता है।'' उपरोक्त परिभाषा ने दो पक्षों पर बल दिया है- मानवीय जरूरतें और प्राकृतिक परिवेश। मानवीय आवश्यकताओं पर बल देने से विकास का समग्र उद्देश्य पूरा होता है। कमीशन का विचार है कि प्राकृतिक संसाधनों में मानवीय जरूरतों को पूरा करने की सीमित क्षमता है। इस रिपोर्ट में समानता, पर्यावरण और वृद्धि के संतुलन पर बल दिया गया है।

प्रत्येक मानवीय गतिविधि से पर्यावरण में बदलाव आता है। सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाते हुए नकारात्मक प्रभावों के शमन और क्षति पूर्ति के लिए प्रयास किया जाना है। इस प्रकार विकास के स्थायित्व को बनाए रखा जा सकता है और प्राकृतिक संसाधन आधार को नुकसान नहीं होता है।

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

सम्पादकीय...

जल का संरक्षण

पानी की उपलब्धता आने वाले युग की सबसे बड़ी समस्या होगी, यह कहना कोई नई बात नहीं है। भारत के कई राज्यों के गांवों में आज भी पेयजल की बड़ी भारी किल्लत है। यहां तक की नदियों थोड़े दूर बसे गांव भी पेयजल और सिंचाई के लिए पानी को तरसते रहते हैं।

दूसरी ओर शहरों में बड़े-बड़े बगीचों, उद्यानों, सरकारी कार्यालय के आंगनों, बड़ी-बड़ी आलीशान कोठियों, बंगलों में बड़े-बड़े लॉन विकसित कर भूमिगत जल का अंधाधुंध विदोहन किया जा रहा है। वाहनों को धोने के लिए हजारों गेलन पानी बहा दिया जाता है।

फव्वारों तथा कृत्रिम झरनों में व्यर्थ पानी उडाया जा रहा है। शहरों में हजारों गिलास पानी तो कार्यालय की मीटिंगों में गिलास में छोड़े गये पानी और उसे धोने में ही व्यर्थ हो जाता है। सार्वजनिक नलों से बस स्टेण्ड, रेल्वे स्टेशन आदि पर टपकता देखना आम बात है।

यह भी विडम्बना है कि वर्षा के मौसम में बमुश्किल वर्षा के दिन 20-25 ही रह गये हैं जो भी वर्षा जल प्राप्त होता है उसका संरक्षण एवं सदुपयोग करने की मानसिकता अभी भी लोगों में नही बनी है। सरकारों द्वारा जल चेतना अभियान चलाये जाते है, लोगों में चेतना जागृत करने के लिए, लेकिन अभियानों का हश्र क्या होता है यह किसी से भी छुपा हुआ नहीं है। यह केवल सरकारी औपचारिकताएं बनकर रह जाता है। लोगों पर कोई प्रभाव छोड़ नही पाता है। बल्कि ऐसे आयोजनों में भी पानी व्यर्थ बहता देखा जाता है।

वस्तुतः पानी की विकराल होती समस्या बड़े-बड़े जलाशयों का बनाने, नदियों के बहते जल को रोक कर बांध बनानें अथवा करोड़ों-अरबों रुपये खर्च करके पेयजल योजनाऐं बनाने से हल होने वाली नही है।

जयपुर का रामगढ़ बांध उदाहरण है कि मात्र 100 वर्षों में ही यह जलाशय समाप्त हो गया है ओर बीसलपुर को विकल्प के रूप में बनाया जा रहा है। लेकिन नदियों में जल ही नहीं होगा तो मिलेगा कहां से ? समस्या का एक ही हल है कि पानी की बर्बादी रोके, जल उपयोग में मितव्ययता बरतें और हर व्यक्ति जल बचाने के उपाय करें तो जल संकट से एक सीमा तक निजात मिल सकती है।

ललकारों की बात करें.....

धूप, समन्दर, बारिश, सपनों, तूफानों की बात करें
जीवन में उत्साह चाहिये, अंगारों की बात करें

देश भक्ति खो गई, जमाना, ढूँढ रहा सद्भावों को
मातृभूमि पर मिटने वाले, "परवानों" की बात करें

दिल्ली से देहात तलक है, "अनैतिकता-की-सत्ता"
कलम उठा तू, नैतिकता के, भण्डारों की बात करें

मौसम-खूशबू, जुही-चमेली, रंग-गुलाबी भाते हैं
"मानवता की खूशबू वाले", इनसानों की बात करें

कोठी-बंगला, कार-प्यार में, भी उदास हैं लोग यहाँ
"फुटपाथों पर सोने वाली", मुस्कानों की बात करें

कहाँ ढूँढता है तू उसको, ईश्वर तो बैठा मन में
मन को निर्मल कर, ईश्वर की, झंकारों की बात करें

मिटते हैं सब अपने क्रम से, दुनियां याद नहीं रखती
"श्याम" जमाना याद रखेगा, ललकारों की बात करें

शराफत हार जायेगी.....

कभी कस्ती जो डूबी तो, कहानी याद आयेगी
जवानी, फिर समन्दर की, जवानी याद आयगी

अभी तो बाजुओं पर, आपने कुछ जख्म देखें हैं
कभी सीना जो देखोगे, तो रूहें काँप जायेंगी

शहरों से कभी मत पूछना, तुम प्यार का हुनर
तेरे अरमान की कस्ती, किनारे डूब जोयगी

"अमीरे-शहर की" , कोठी में बैठे, चन्द लोगों से
न पूछो सादगी का घर, शराफत हार जायेगी

सियासी दौर है भाई, मनुजता हार बैठी है
तेरी इन्सानियत, तेरे नहीं, कुछ काम आयेगी

"अदब" के क्षेत्र में भी, अब दुकानें लग चुकी लोगों
बिना जरिये, नहीं अब, योग्यता सम्मान पायेगी

पर्यावरण एवं वास्तु

दिशाओं में शक्ति है और वास्तुशास्त्र उन दिशाओं में निहित प्राकृतिक शक्तियों के नियोजन का ही शास्त्र है। चूंकि आजकल वास्तुशास्त्र की मान्यता बढ़ रही है और लोग वास्तु सिद्धान्तों पर भवन निर्माण या सुधार कर रहे हैं, इसलिए यह जरूरी है कि उन्हें दिशाओं और कोणों के बारे में सही जानकारी हो। अक्सर ऐसा देखा गया है कि लोग दिशाओं का निर्धारण सूर्य से करते हैं, जिस दिशा से सूर्य उदय होता है उसे पूर्व मानकर चारों कोण और चारों दिशा निश्चित कर लेते हैं किन्तु हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि सूर्य उत्तरायण और दक्षिणायण हुआ करते हैं। मकर संक्रांति के बाद सूर्य उत्तारायण और कर्क संक्रांति के बाद दक्षिणायण होते हैं। अगर आप अपनी छत पर खड़े होकर प्रतिदिन सूर्योदय देखते हैं तो आपको ज्ञात होगा कि सूर्योदय का स्थान बदलता रहता है। इसलिए सूर्य उदय के स्थान पर ही ठीक पूर्व दिशा मान लेना उचित नहीं होगा क्योंकि सूर्य उदय का स्थान निश्चित नहीं है, यह उत्तर या दक्षिण की ओर अयन के आधार पर खिसकता रहता है। अतः इस आधार पर दिशा निर्धारण करना उचित नहीं है क्योंकि दिशा निर्धारण के लिए हमें एक स्थिर बिंदु चाहिए। प्राचीन काल में लाग दिशा ज्ञान के लिए ध्रुव तारे को आधार मानते थे, जोकि वैज्ञानिक रूप से भी सही प्रतीत होता है। ध्रुव तारा ठीक उत्तर दिशा में स्थित है और इसका नाम ध्रुव इसलिए है कि यह अडिग है, स्थिर है, इसमें विचलन नहीं है।

कुबेर का स्थान है उत्तर दिशा

वैज्ञानिक कहते हैं कि पृथ्वी के उत्तरी मध्य बिंदु उत्तरी ध्रुव से एक सीधी रेखा उत्तर की ओर ही खींचते चले जाएं तो यह सीधे ध्रुव तारे पर जाकर मिलेगी। अर्थात घूमती हुई इस पृथ्वी का उत्तरी बिंदु सीधे ध्रुव तारे की सीध में रहता है। यह तो सब जानते हैं कि उत्तर की ओर चुंबकीय तरंगों का प्रवाह सतत् दक्षिण की ओर बहा करता है। वास्तु में इसलिए उत्तर दिशा को कुबेर का स्थान कहते हैं क्योंकि इस ओर से सदा तरंगों का अबाध आगमन होता रहता है। इन तरंगों के उचित उपयोग के सिद्धांत ही वास्तु शास्त्र के मूल आधार हैं। उत्तर जीवन की दिशा है, स्थायित्व की दिशा है।

हर स्थान के अपने देवता

दिशा निर्धारण वास्तु का सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। वर्तमान समय में लोग दिशा निर्धारण के तकनीकी ज्ञान के अभाव में अनुमान के आधार पर दिशा निश्चित करके समाधान कर रहे हैं। जबकि वास्तु पद विन्यास के अनुसार हर स्थान के अपने देवता हैं और यदि दिशा निर्धारण में जरा भी चूक हो गई तो वास्तु पद बदल जाता है और इससे लाभ की अपेक्षा हानि की अधिक संभावना होती है। दिशा निर्धारण के लिए प्रथम तो कंपास का प्रयोग करें, दूसरे इस कंपास को हमेशा भूखंड के मध्य में रखकर ही दिशा निर्धारण करें, अन्य स्थान पर रखने से उचित निर्धारण असंभव है। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि कुछ लोगों को यह शंका बनी हुई है कि निर्मित भवन पर ही वास्तु को प्रभावी माना जाए। आप अपनी यह भ्रांति भी हमेशा के लिए दूर कर लें कि वास्तु में दिशा निर्धारण और पद विन्यास पूरी चारदीवारी का ही होता है। इसमें निर्माण किए जाने वाला क्षेत्र और चारदीवारी के अंदर का छूटा हुआ क्षेत्र दोनों शामिल हैं, इसमें संदेह नहीं करना चाहिए।♦

गुग्गुल से खिलेंगे वन

प्राकृतिक औषधियों में गुग्गुल का बड़ा महत्व है। इस पादप के संरक्षण हेतु राज्य में अनेक उपाय शुरू किये गये हैं। हृदय रोग में लाभकारी आयुर्वेदिक औषधि गूगल (गुग्गुल) के दिन अब बहुरेंगे। गुजरात के अलावा केवल राजस्थान में प्राकृतिक रूप से मिलनेवाले इस लुप्तप्राय पौधे को बचाने के लिए भारत सरकार ने एक करोड़ रुपये की योजना बनाई है।

राष्ट्रीय औषधीय प्लांट बोर्ड (आयुष) तथा स्वास्थ्य व परिवार कल्याण विभाग की इस योजना के तहत गूगल के पौधे तैयार कर आमजन में वितरित किए जाएंगे। संरक्षित क्षेत्र व बाग तैयार करने, जंगलों में पौधारोपण करने के साथ ही गूगल के शोध व शिक्षण का विस्तार किया जाएगा।

संरक्षण क्षेत्र जोधपुर-बाड़मेर में

परियोजना के अंतर्गत कायलाना (बड़ा भाखर) ब्लॉक, जोधपुर एवं किराडू ब्लॉक बाड़मेर में 200 हेक्टेयर क्षेत्र में गूगल के लिए औषधीय पौध संरक्षण क्षेत्र स्थापित होगा।

दोनों क्षेत्रों को तीन वर्ष में 25 लाख रुपये का बजट स्वीकृत है। इसके लिए एक्शन प्लान बनाने को कहा जा चुका है।

हृदय रोग में उपयोगी

इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजरवेशन ऑफ नेचर एण्ड नेचुरल रिसोर्सेज के स्पीशीज सर्वाइवल कमीशन के सदस्य डॉ. विनीत सोनी ने बताया कि चरक व सुश्रुत संहिता में गूगल को अत्यधिक उपयोगी बताया गया है। हृदय रोग व उच्च रक्तचाप में गूगल से बनी दवाई काम में ली जाती है। इसके गोंद से एलोपैथी दवाएं बनाई जाती हैं जो कि हृदय रोग में काम आती हैं। कुछ साल से दवा कम्पनियों ने गूगल का अतिदोहन किया है, जिससे यह तेजी से समाप्त होता जा रहा है। इसे पूजा में भी काम लिया जाता है।

राजधानी में 10 हजार

राज्य के जिन जिलों में गूगल प्राकृतिक रूप से पाया जाताहै, वहां इसकी कलम से बाग लगाए जाएंगे। इसके लिए जयपुर में जगतपुरा रोड स्थित बालाजी नर्सरी से 10 हजार गूगल पौध तैयार किए जा रहे हैं जिन्हें जयपुर के वनक्षेत्र में ही लगाया जाएगा।

पर्यावरण समाचार

सौर भवन कार्यक्रम

ऊर्जा की बचत की प्रवृति को बढ़ावा देने हेतु केन्द्र सरकार द्वारा सौर भवन कार्यक्रम शुरू किया गया है जिसका उद्देश्य भवन की डिजाइन में सौर पेसिव तकनीकों को प्रोत्साहन देना और देश में वित्तीय तथा प्रवर्तन प्रोत्साहनों के संयोजन प्रदान करते हुए सौर भवनों का प्रदर्शन करना ताकि पारंपरिक विद्युत की खपत में कमी/संरक्षण किया जा सके।

योजना के प्रावधान

इस योजना में विस्तृत परियोजना प्रतिवेदनों को तैयार करने के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है तथा अभियंताओं, आयोजनकारों, भवन निर्माताओं, वास्तुकारों, परामर्शदाताओं, आवासीय निधिकरण संगठनों तथा संभावित प्रयोक्ताओं के लिए कार्यशालाओं तथा सम्मेलनें करने के अतिरिक्त सौर भवनों का निर्माण और भवनों से संबंधित दस्तावेजों के संकलन और प्रकाशन के लिए भी सहायता दी जाती हैं।

सौर भवनों के लिए केन्द्रीय वित्तीय सहायता

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की लागत का 50 प्रतिशत , 2 लाख की अधिकतम सीमा तक (एक वर्ष में प्रत्येक राज्य के लिए अधिकतम 10 विस्तृत परियोजना रिपोर्ट) भवन के निर्माण की लागत का 10 प्रतिशत तक, अधिकतम 50 लाख की सीमा तक (एक वर्ष में प्रति राज्य अधिकतम दो भवनों के लिए)

सौर भवनों के लिए केन्द्रीय वित्तीय सहायता की पात्रता

विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के लिए सभी सार्वजनिक और निजी संस्थागत भवन

राज्य नोडल अभिकरणों के भवन और अन्य सार्वजनिक/शासकीय भवनों के निर्माण हेतु।

'सांभा' आज पहुंचेगा टॉडगढ़

नए साल का पहला दिन पैंथर 'सांभा' के लिए खास बन गया। दो माह पूर्व मसूदा के रिहायशी इलाके से काफी मशक्कत के बाद पकड़े गए इस पैंथर को गुरुवार को जयपुर के चिड़ियाघरसे अजमेर लाया गया।

वन विभाग के अधिकारी इसे शुक्रवार को टॉडगढ़ रावली अभयारण्य में छोड़ेंगे। ग्राम मालाजी का बाड़िया में 27 अक्टूबर की दोपहर 'सांभा' में एक किशोर व युवक सहित वनपाल पर हमला कर दिया था। ग्रामीणों की भीड़ से बचने के लिए सांभा ने एक कुएं में छलांग लगा दी।

मंडल वन अधिकारी के.सी. मीणा सहित अन्य अधिकारियों ने 11 घंटे की मशक्कत के बाद 'सांभा' को ट्रेंकुलाइजर गन से बेहोश कर कुएं से निकाला। कुएं से निकालने के दौरान उसके पंजे, पीठ तथा सिर में चोट आई। उपचार के लिए उसे जयपुर के चिड़ियाघर भेज दिया गया। अब उसके स्वस्थ होने पर वन विभाग ने उसे अभयारण्य में छोड़ने का निर्णय किया है। शुक्रवार तड़के वन्यकर्मी उसे लेकर टॉडगढ़ रावली अभयारण्य के लिए रवाना होंगे। गौरतलब है कि गत जून माह में ब्यावर के रिहायशी

इलाके से पकड़े पैंथर 'नटवर' को भी अक्टूबर माह में टॉडगढ़ रावली अभयारण्य में छोड़ा गया था। मीणा ने बताया कि अभयारण्य में फिलहाल 21 पैंथर हैं और उनके संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

साइबेरियाई सारस बुलाने का नया तरीका

घना में पक्षियों का गाइड बनाकर उड़ाया जाएगा हैंग ग्लाइडर

रूठे साइबेरियाई सारसों को भारत लाने के लिए एक नायाब तरीका खोजा गया है। भरतपुर के घना अभ्यारण्य में हैंग ग्लाइडर (आभासी सारस) को इन पक्षियों को गाइड बनाकर उड़ाया जाएगा और नवजात सारस उसके पीछे चले आएंगे। इस प्रयोग के तहत वैज्ञानिकों ने साइबेरियाई सारस जैसे दिखने वाले ग्लाइडर को इन प्रवासी पक्षियों के नवजातों का नेतृत्व करते हुए पारंपरिक मार्ग से उड़ाया। उसके पीछे-पीछे ये पक्षी भारतीय गंतव्य के आधे रास्ते उजबेकिस्तान तक जा गए।

अगर प्रयोग पूरी तरह सफल रहा तो राजस्थान के भरतपुर में स्थित घना अभयारण्य फिर से साइबेरियाई सारसों से गुलजार हो सकता है। इस अभयारण्य में 2002 के बाद से एक भी साइबेरियाई सारस नहीं आया है।

साइबेरिया से भारत तक के प्रवास मार्ग में तमाम परिस्थितिजन्य बाधाओं से इन सारसों की बड़ी आबादी रास्ते में ही खत्म हो जाती है। इसे देखते हुए विशेषज्ञों ने सारसों के पारंपरिक उड़ान-पथ में बदलाव की योजना बनाई है। अमेरिका में ऐसे ही प्रयोग से वूपिंग क्रेंस को संरक्षित करने का प्रयोग किया जा चुका है।

चिड़ियाघर में हैप्पी न्यू इयर

भालू को शहद पोपट को चीकू

नए साल का पहला दिन जयपुर चिड़ियाघर के जानवरों के लिए भी सौगात भरा होगा। साल के पहले दिन घर-घर में नए-नए पकवान बनेंगे, वहीं इन जानवरों को भी मनपसंद खुराक दी जाएगी। जयपुर चिड़ियाघर के अधीक्षक जीबी झालानी ने बताया नया साल के मौके पर सभी जानवरों को विशेष डाइट देने की तैयारी की है।

भालू के लिए उसकी मनपसंद कंगन व शहद की डाइट होगी। हर रोज मूंगफली व चने खाने वाले बंदरों को साल के पहले दिन पिंड खजूर मिलेगी तो बाघ, पेंथर, शेर व मगरमच्छ को बकरे का मांस परोसा जाएगा। सांभर, चीतल व काले हिरण को लाल गाजर दी जाएगी। पक्षियों को चीकू व मटर के साथ ही कुछ पक्षियों को उबले हुए अंडे दिए जाएंगे। बाकी अन्य जानवरों व पक्षियों को भी उनकी मनपसंद खुराक दी जाएगी।

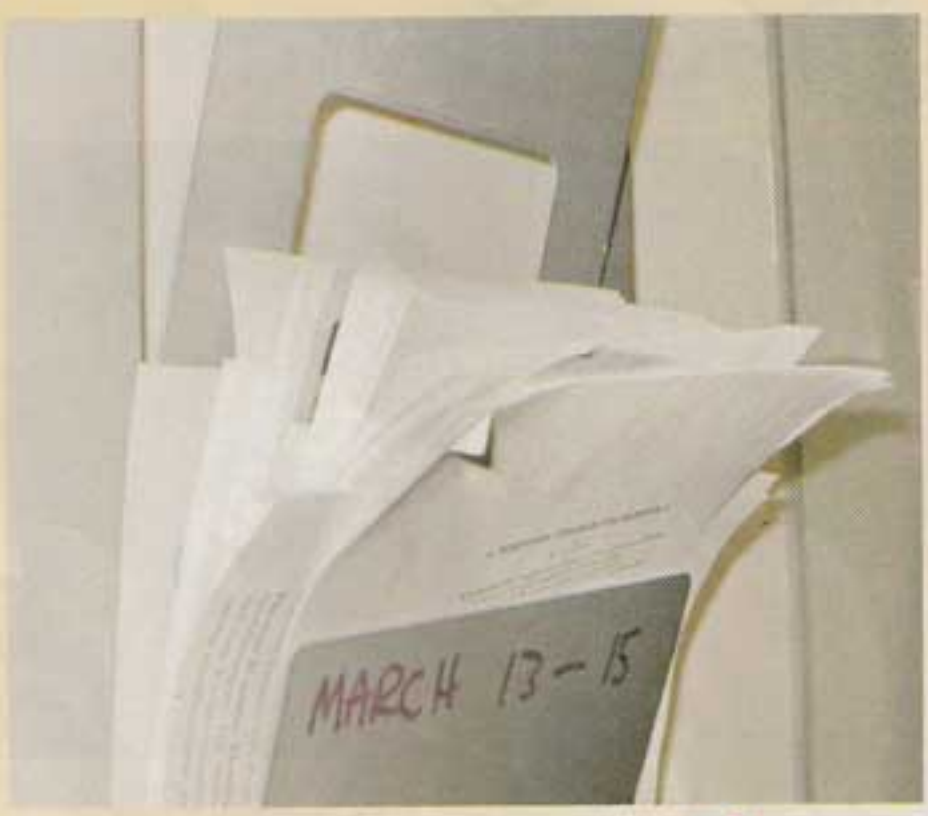

कागज की बचत करें

आपको विदित है कि वृक्षों, वनस्पतियों तथा घास आदि वन उपजों से कागज का निर्माण होता है और कागज की बढ़ती मांग के कारण विगत् वर्षों में जंगलों को बहुत काटा गया है जिससे अनेक वन क्षेत्र संकट के कगार पर पहुँच गये हैं।

कागज की बचत का मतलब है वृक्षों का बचाव और पर्यावरण की सुरक्षा में वृक्षों की भूमिका सर्वोपरि है। व्यक्ति को सांस लेने के लिए हवा में ऑक्सीजन की जितनी आवश्यकता पड़ती है, वह लगभग 625 वर्ग फुट में उगी वनस्पति से प्राप्त होती है। फिर भी घरों, स्कूल-कॉलेजों, दफ्तरों इत्यादि में हम बहुत बड़ी मात्रा में कागज का दुरुपयोग करते हैं।

हम जानते हैं कि कागज, लकड़ी से बनता है और लकड़ी वृक्षों से प्राप्त होती है, जो प्रदूषण नियंत्रण में अहम भूमिका निभाते हैं। अतः पर्यावरण के हित में वृक्षों को कटने से बचाना बहुत जरूरी है। इसलिए कागज का इस्तेमाल सोच-समझकर करें। ऐसा करके अनेक जंगलों को व्यर्थ कटने से बचाया जा सकता है। हमें स्कूल की कापियों पर और सामान्य लिखाई के काम आने वाले कागज के दोनों ओर लिखकर कागज का पूरा सदुपयोग करना चाहिये।

कागज की बनी तश्तरियों (प्लेटों) और प्यालियों (कपों) का इस्तेमाल कम-से-कम करें। बेहतर यही होगा कि उनका इस्तेमाल न ही करें। इनकी जगह चीनी मिट्टी की बनी तश्तरी-प्यालियों का इस्तेमाल करें। समय की मांग है कि आज हम मुंह तथा हाथ पोंछने के लिए कागज के बने नैपकिनों की जगह रुमाल या तौलिए का इस्तेमाल करें। यथासंभव अधिक-से-अधिक मात्रा में कागज बचाने का प्रयास करें। बेकार या रद्दी कागज जलाएं नहीं, बल्कि फेरी वाले या कबाड़ी वाले के हाथों बेच दें। इस तरह रद्दी कागज पुनः उपयोगी कागज बनाने के काम आ सकती है।

कागज का उपयोग घरेलू सजावटी सामान बनाने के लिए एक कुटीर उद्योग के रूप में भी हो सकता है। इसके लिए अनेक प्रकार की तकनीकी और प्रोद्योगिकी उपलब्ध है। कागज की लुग्दी बनाकर विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक उत्पाद तथा कार्टून एवं गत्ते आदि बनाकर छोटे-छोटे उद्योग ग्रामीण क्षेत्रों में विकसित किये जा सकते हैं। यह कार्य ग्राम्य वन सुरक्षा और प्रबन्ध समिति के सदस्यों द्वारा भी किया जा सकता हैं। ●

हरियाली से खुशहाली

उदयपुर जिले की गोगून्दा पंचायत समिति के मजावद गांव में वर्षाकाल का सारा पानी, नदी-नालों से होकर भूमि का कटाव करते हुए व्यर्थ बह जाता था। गर्मियों के समय में पशु-पक्षियों एवं ग्रामवासियों को पानी की बूंद-बूंद के लिए तरसना पड़ता था।

उदयपुर जिले में चलाई जा रही "राष्ट्रीय ग्रामीण गारंटी योजना" के तहत किए जा रहे विभिन्न कार्यों से लोगों को गांवों में ही रोजगार के अवसर तो उपलब्ध हो ही रहे हैं साथ ही निर्मित कार्यों के अन्य सकारात्मक परिणाम भी दिखने लगे हैं। जिले की गोगून्दा पंचायत समिति की मजावद ग्राम पंचायत में भी रोजगार गारंटी योजना के तहत नाला उपचार एवं वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर निर्माण से बारह महीने हरियाली दिखने लगी है। पर्यावरण प्रेमियों के लिए यह गांव प्रेरणा स्थल बन सकता है।

रोजगार गारंटी योजना के तहत मजावद ग्राम पंचायत में वर्ष 2006-07 में 10.74 लाख रुपये की लागत का नाला उपचार कार्य एवं वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर निर्माण कार्य स्वीकृत किया गया था।

क्षेत्रवासियों की जरूरतों के अनुसार योजना के तहत स्वीकृत कार्य पूर्ण होने पर लोगों में खुशहाली आ गई है। नाला उपचार कार्य के पश्चात् वर्षाकाल का पानी छोटे-छोटे चेकडेमों में रुक-रुक कर बहता है। चेकडेमों की उपयोगिता इससे भी बढ़ी है कि अब पानी के साथ बहकर जाने वाली मिट्टी का कटाव रुक गया है।

स्ट्रक्चर निर्माण से भूमि एवं कुंओं के जलस्तर में यकायक बढ़ोतरी हुई है। पानी के अभाव में गांववासियों को पहले दूर-दूर से चारा लाना पड़ता था लेकिन अब आस-पास ही बड़ी मात्रा में चारा उगने लगा है। उत्तम चारे के कारण पशुओं में दूध की मात्रा बढ़ी है। क्षेत्र में हरियाली छाने के साथ गांववासी पशुपालन, कृषि एवं वृक्षारोपण से आर्थिक लाभ कमाने लगे हैं। ●

जयपुर में

अध्यापकों हेतु पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम

कार्यक्रम में भाग लेने आये शिक्षक एवं अन्य प्रतिभागी

जयपुर में शासन सचिवालय के पीछे अशोक विहार उद्यान में निर्मित पर्यावरण चेतना केन्द्र पर 17 जनवरी, 2009 को अध्यापकों हेतु एक दिवसीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन उप वन संरक्षक जयपुर (मध्य) एवं एक स्वयंसेवी संस्था नेचर क्लब ऑफ राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजधानी के लगभग 30 स्कूलों के ईको क्लब प्रभारी अध्यापकों/अध्यापिकाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान श्री अभिजीत घोष ने कहा कि पर्यावरणीय सरोकारों के प्रति युवा वर्ग में चेतना जगाने में शिक्षकगण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं क्योंकि स्कूली शिक्षा में पर्यावरण संरक्षण के उपायों को भली-भांति समझाकर युवा वर्ग को तैयार किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि आज जलवायु परिवर्तन, हरियाली का विनाश तथा बढ़ता हुआ प्रदूषण मानव स्वास्थ्य के लिए एक बहुत बड़ा खतरा बन गया है। लेकिन यदि शिक्षक वर्ग छात्रों और सामान्य जनों में जनचेतना जगाये तो इस समस्या से काफी हद तक निजात मिल सकती है।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक, राजस्थान श्री अभिजीत घोष अध्यापकों को सम्बोधित करते हुए।

श्री घोष ने कहा कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को पर्यावरणीय सरकारों के प्रति संवेदनशील बनाना है ताकि वे अपने विद्यार्थियों को संस्कारित कर सकें।

विशिष्ठ अतिथि के रूप में बोलते हुए मुख्य वन संरक्षक, श्री एस.के. श्रीवास्तव ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण हमारी सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है और शिक्षा के माध्यम से समाज को जागृत किया जा सकता है। इस अवसर पर वन संरक्षक श्री वाई.के. डक ने शिक्षकों के लिए इस आयोजन को एक अच्छा प्रयास बताया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता उप वन संरक्षक सुश्री शिखा मेहरा ने की। सुश्री मेहरा ने इससे पहले कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के दौरान जलवायु परिवर्तन, वन्यप्राणी संरक्षण, पौधशाला विकास तथा विद्यालयों में ईको-क्लब गठन करने और अध्यापकों में नेतृत्व क्षमता का विकास आदि विषयों पर विषय विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिये गये। कार्यक्रम में जलवायु परिवर्तन पर एक फिल्म भी दिखाई गई।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी संभागियों को विभाग की ओर से प्रमाण पत्र वितरित किये गये। सभी शिक्षकों ने वन विभाग की इस पहल को एक सार्थक प्रयास बताया।

(पृष्ठ 1 का शेष)

वनों और वन भूमि में मांग

वन नष्ट होते जा रहे हैं, वन भूमियों की भूमि नग्न पड़ी है और मिट्टी

का क्षरण हो रहा है। जलागम के लगातार उपेक्षित रहने से बाढ़ आने, बार-बार सूखा पड़ने की घटना होती है और अंत में एक बड़ा हिस्सा रेगिस्तान में तब्दील हो जाता है। यह भयावह स्थिति और इसके साथ जुड़ी बाढ़ और सूखे की परिस्थितियों से पर्यावरण पर एक नकारात्मक प्रभाव होता है। इस समय हिमालय विकास के नाम पर वृक्षों से क्षीण हो गया है। त्रासदी यह है कि पौधारोपण से पानी की खपत बढ़ गई है, मिट्टी का आवरण घट गया है और वन समाप्ति की ओर बढ़ रहे हैं। अपने आप में प्राकृतिक रूप से मिले-जुले वन, जो मिट्टी के निर्माण की फैक्ट्री थी, इसे अब खानों में बदल दिया गया है। सर्वोत्तम प्रौद्योगिकी के बावजूद हिमालय क्षेत्र में पौधारोपण कार्यक्रमों के लिए उपयोग में आने वाली तकनीक ओर ज्ञान दरअसल शहरी आयोजनाकारों का नजरिया है। वे भूमि को उद्योग के लिए कच्ची सामग्री का उत्पादन कर ढकना चाहते थे, बजाए इसके वे स्थानीय समुदायों की भोजन, चारे, ईंधन और उर्वरकों की मूलभूत आवश्यकताएं पूरी करें। पौधों की अन्य प्रजातियों को नहीं उगाने का एक अन्य कारण नमी की कमी है। चीड़ पाइन के अलावा कोई अन्य प्रजाति इस कमजोर मिट्टी और सूखी मौसम परिस्थितियों में जीवित नहीं रह सकती। इस प्रकार पौधों को पानी देने की व्यवस्था हिमालय पर्वतीय क्षेत्रों में पौधारोपण कार्यक्रमों में प्रथम वरीयता होनी चाहिए। कुछ मामलों में यह ऊपरी हिस्सों में तालाब खोदकर और वर्षा जल को ढ़लानों में संग्रह कर किया जा सकता है, परन्तु बड़े स्तर पर पानी प्रदान करने का एक मात्र समाधान नदियों, छोटी नदियों और गहरी खाइयों में बहने वाली धाराओं से पानी का उठाना है। यह तभी संभव है यदि सस्ती बिजली उपलब्ध हो। ऐसा कोई भी स्रोत छोड़ा नहीं जाना चाहिए। पहाड़ी क्षेत्रों में अनुकूल भाग होते हैं, अतः निम्नलिखित प्रचालन योग्य समाधानों से पहाड़ी क्षेत्र में जल की विवेकपूर्ण आयोजना और उपयोगिता की जा सकती है।

1. निम्नलिखित के लिए जल का मार्ग परिवर्तन प्राकृतिक गढ्ढों में भण्डारण सकरे हिस्सों वाली घाटियों में बंडिंग फसलों का हरा भरा बनाना और सिंचाई करना।
2. वर्षा जल और भूमिगत जल का दोहन
3. छोटी इकाइयों से विद्युत उत्पादन
4. ड्रेनेज में सुधार और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से विभिन्न पादप प्रजातियों को उगाना।

जहां कहीं विकास से प्राकृतिक उतार-चढ़ाव में विघ्न पड़ता है वहां पानी के मार्ग परिवर्तन में इस प्रकार जोड़तोड़ किया जाए कि पानी को प्राकृतिक गडढों या सकरी घाटियों में भण्डारित किया जा सके। पानी को उचित रूप से मार्ग देकर या ढ़लानों पर वनस्पति लगाकर पानी के वेग को कम करके काफी हद तक क्षरण बलों को नियंत्रित किया जा सकता है। इन तकनीकों से जलागम के सुदृढ़ीकरण में भी योगदान मिलता है।

अनुरोध :

वानिकी समाचार में प्रकाशनार्थ आलेख, छायाचित्र, विभागीय गतिविधियों की जानकारी, साझा वन प्रबन्ध की सफल कहानियां, कविताएं तथा अन्य सामग्री प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। यह सामग्री ई-मेल से भी भेजी जा सकती है।

इस पत्रिका के अंक वेबसाइट पर भी उपलब्ध हैं।

- सम्पादक

Book-Post

वन विभाग, राजस्थान के लिए उप वन संरक्षक, वानिकी प्रशिक्षण संस्थान, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर द्वारा प्रकाशित एवं प्रिन्ट 'ओ' लैण्ड, जयपुर से मुद्रित। 2009/3000
संरक्षक : अभिजीत घोष; संपादक : यू.एम. सहाय; सहायक सम्पादक : सूरज जिद्दी Website : www.rajforest.nic.in • E-mail : vanikisamachar@yahoo.co.in